धर्म के सैद्धांतिक-पक्ष के परिप्रेक्ष्य में आंचलिक हिंदी उपन्यासों का अनुशीलन

डॉ० अर्चना धामा
एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
डी०ए०वी० (पी०जी०)कॉलेज, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

सारांशिका

मानव मन में यह भावना सदैव रही है कि इस संसार का नियंत्रण कोई अज्ञात, अदृश्य शक्ति करती हैं। स्वभावतः ही मानव मन इन अज्ञात और अदृश्य शक्तियों को समझने की चेष्टा करता है, उनके प्रति अनेक कल्पनाएं करता है और मान्यताएं विकसित करता है, बीमारी, मृत्यु और व्याख्यातीत अप्रत्याशित घटनाओं को दैवी मानकर मन को सांत्वना देता है। मानव को गोचर तथा अगोचर जीवात्मा के संसार पर विश्वास करना पड़ता है। इन अतींद्रिय और दैवी शक्तियों से मानव जिस प्रकार के संबंधों की स्थापना करता हैं, वे धर्म अथवा जादू या इनके बीच की किसी स्थिति का निर्माण करने में सहायक होते हैं। जब किसी समाज को उसके संगठन, उपलब्धियों और प्रगति की दृष्टि से आंका जाता है तो उसकी धार्मिक पृष्ठभूमि और उसके सदस्यों को प्रभावित करने वाले धार्मिक कारकों का अध्ययन नितांत आवश्यक होता है। इस शोध में सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि धार्मिक विश्वास और श्रद्धा का महत्त्व समूह में सुरक्षा और सहयोग की भावना पैदा करने के लिए भी है। धार्मिक विश्वासों की छाप किसी न किसी रूप में समाज के साहित्य, कला, सामाजिक गतिविधियों और क्रियाकलापों पर भी अवश्य रहती है।

मुख्य शब्दः अभिमंत्रित, अतिमानवीय जगत, अभीष्ट, प्रचण्ड, तर्पण, दैवी शक्ति, ध्यानावस्थित।

प्रस्तावना

धर्म के सैद्धांतिक पक्ष में जादू, कतिपय शब्द, शब्दोच्चार के साथ विशिष्ट क्रियाएं, जादू करने वाले या पुजारी की विशिष्ट क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

जादू उस अतींद्रिय शक्ति को कहते हैं, जिससे अतिमानवीय जगत या उसकी कतिपय स्थितियों पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सके और जिसकी क्रियाओं को अपनी इच्छानुसार भले–बुरे, शुभ–अशुभ उपयोग में लाया जा सके।

किसी भी जादू क्रिया में तीन तत्त्व समाविष्ट होते हैं –

कतिपय शब्द–

उच्चारित या अभिमंत्रित शब्द साधारण से कुछ भिन्न होते हैं और सामान्यतः गुप्त रखे जाते हैं। केवल इस क्रिया में दक्ष व्यक्ति ही इनका उपयोग जानते हैं और इनको वे अपने शिष्यों को ही सिखाते हैं। कभी–कभी जब जादू सामाजिक रूप से मान्य होता है, तब उस समाज के सभी सदस्य उन शब्दों से परिचित होते हैं, किंतु इस स्थिति में भी इन शब्दों को उन सब लोगों से गुप्त रखा जाता है जो इनकी संस्कृति के सदस्य नहीं है।

'हौलदार' में अल्मोड़ा के घोलछीना गांव के लोगों का जीवन चित्रित किया गया है। यहां कुछ लोगों के शरीर में देवता का अवतार होता है।

सैम देवता का आसन जब लग जाता है तो पूर्ण अवतार लिए बिना पद्मासन खुलता नहीं। हरकसिंह के शरीर में सैम देवता का अवतार होता है तब गांव की गोपुलि काकी ही ऐसी है जो उस आसन को खुलवा सकती है।

'शालवनों का द्वीप' में बस्तर के गोंड लोगों का जीवन चित्रित है। गांव का पुजारी 'लस्के' कहलाता है। लस्के पर जब देवी आती है तो वह हुर्ररर। हिच्च। हिच्च जैसी आवाजें निकालते हैं। और उनकी किल्लोल भरी चीखें सुनाई देती हैं।

'सूरज किरण की छाँव' में जब गोरे अवसर पर चुड़ैल आती है तब सिरहा मंत्र पड़ता है –– काली है, कंकाली है, टीले वाली है

गली की गांव की है

मेरे हाथ वीर भवानी

'वन के मन में, बिहार के सिंह भूम जिले के 'हो' लोगों की जीवन–गाथा चित्रित है। ये लोग जंगल में हाथी सामने आ जाने पर मंत्र पढ़ कर उसे वशीभूत कर लेते हैं।

'रतिनाथ की चाची' में बिहार के शुभंकरपुर गांव का वर्णन है। चंडी, गीता अथवा किसी अन्य धार्मिक ग्रंथ का पारायण करते समय ब्राह्मण किसी से भी बात नहीं कर सकते। यदि अत्यंत अनिवार्य आवश्यकता पड़ जाए तो संस्कृत भाषा का प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि यह देवताओं की वाणी है। स्पष्ट भाषा में डू डू या ऊ आ जैसी अव्यक्त ध्वनियों का सहारा भी लिया जाता है। जैसे कोई निमंत्रण देने आए तो पूछा जाता है डोड डोड डा डे डा (कौन–कौन आएगा)। 'मैलाआंचल' में बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गांव का वर्णन है। यहाँ ओझा जब चक्कर पूजता है तो हुं–हुं, हुं, हुं, फुत फुत, हि हि हि हि शब्द करने लगता है।

शब्दोच्चार के साथ कतिपय विशिष्ट क्रियाएं–

मंत्रों के प्रतिफलित होने के लिए बहुधा उनके उच्चारण के साथ कतिपय क्रियाओं का करना भी आवश्यक होता है। ये क्रियाएं मंत्रोचार को नाटकीय तत्त्व प्रदान करती हैं। यह विश्वास किया जाता है कि मंत्रोच्चार और क्रियाओं का सम्मिलित प्रभाव अभीष्ट की सिद्धि को पास लाता है।

बस्तर की गोंड जनजाति से संबंधित आंचलिक उपन्यास 'जंगल के फूल' तथा 'सूरज किरण की छाँव' में गोरे अफसर पर जब चुड़ैल हावी हो जाती है तब सिरहा उसे उतारने का यत्न करता है। वह

झाड़ू का टुकड़ा अपने हाथ में लेता है और जमीन पर बैठ जाता है। सामने एक सूप में थोड़े नुका (चावल) रखे जाते हैं। सिरहा हाथ में पानी लेकर मंत्र पढ़ना आरंभ करता है।

अंत में चुड़ैल गोरे को छोड़ने के लिए तैयार हो जाती है। एक नारियल फोड़ा जाता है और घी शक्कर का होम देकर सिरहा बाहर आ जाता है। मैदान में झाड़ू का टुकड़ा गाड़कर गोरे के पास जाता है और उसके सिर पर हाथ फेरता है। गोरा बिल्कुल ठीक हो जाता है।

'जंगल के फूल' में सिरहा मरे हुए लड़के को झाड़–फूंक करके, उसके सिर से जूं निकाल कर उसके खून से हवन करता है और उसकी भस्म को पत्ते में लपेट कर नदी में बहाने ले जाता है। उसके वापस लौटने तक लड़का जीवित हो जाता है।

'कब तक पुकारूं' मैं खानाबदोश नटों के जीवन को चित्रित किया गया है। गोरखी, माली के सांप काटे का विश झाड़–फूंक तथा मंत्र से उतारता है।

'ब्रह्मपुत्र' में असम के ग्रामीण जीवन का चित्रण है। यहां दूबर पूजा की जाती है। पूजा से पूर्व बस्ती के पुरुष मुर्गे–मुर्गियों, सुअरी आदि को साथ लेकर 5 बार बस्ती की परिक्रमा करते हैं और परिक्रमा के पश्चात मुर्गे–मुर्गियों और सुअरी की बलि देते हैं।

मंत्र सिद्धि के बल पर अतुल कुत्ते का काटा अच्छा कर सकता है और ब्रह्मपुत्र के पवित्र जल की सात बूंदे छिड़क कर सांप के डसे का विष उतार सकता है।

'सफेद मेमने' में राजस्थान के नेगिया गांव का वर्णन है। गोगा जी पीर की भक्ति करने वाले व्यक्ति का सांप काटे का इलाज एकदम सच्चा माना जाता है क्योंकि वह सांपों के ही लोकदेव गोगाजी की कृपा साधे रखता है। वैसे अन्य रोग, दर्द आदि में भी उसके किए झाड़े से आराम मिलता है।

'हौलदार' में अलमोड़ा के घोलछीना गांव के लोगों का जीवन चित्रित किया गया है। जिन व्यक्तियों के शरीर में ढोल–नगाड़ों की आवाज पर अवतार होता है उनका शरीर ध्वनि सम्मोहन से थरथराने लगता है। और सारा शरीर प्रचंड वेग से कंपायमान होने लगता है। मुट्ठियाँ बंध जाती हैं और पद्मासन लग जाता है।

'पानी के प्रचीर' में पूर्वी उत्तर प्रदेश के पांडेपुर गांव के लोगों का जीवन चित्रित किया गया है। पांडेपुर में काली माई के मंदिर पर विराट मेले का आयोजन होता है। आस–पास के लोग देवी के दर्शनार्थ तथा अपना टोना–टोटका, भूत–प्रेत उतरवाने के लिए आते हैं। देवी की डयोड़ी पर नगाड़े बजते हैं। सोखा हाथ में लवग लेकर आंखें मूंद कर ध्यानावस्थित रहता है।

'मैला आंचल' में बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गांव का वर्णन है। गांव के खलासी जी पक्के ओझा हैं। वह भूत–प्रेत को पेड़ में कांटी ठोक कर वश में करते हैं। चक्कर पूजते हैं। वह अपने जादू से अपने टोले की रक्षा करता है। चावल, दूध, अड़हुल के फूल के चक्कर बनाकर बीच में माटी का बड़ा सा दीया रखकर उसमें बड़ी सी बाती जलाते हैं। एक बोतल दारु पीकर रह रहकर दीये की जलती बाती मुंह में ले लेते हैं। जीभ में सुई गड़ा लेते हैं। तब गांव के भक्तिया लोग 'गोचर' शुरू करते हैं। ओझा दीया की बाती को नचाता है, मुंह में लेकर बुझाता है, फूंक मारकर झक से दीया फिर जला देता है। कबूतर को कच्चा चबा जाता है।

'परती परीकथा' में बिहार के थाना रानीगंज के परानपुर गांव का वर्णन है। यहां के केवट, खवास, गहलौटा और गंगोला टोली के लोग परती के परमादेव को पूजते हैं। यह पूजा वर्ष में 2 बार होती है। सवर्ण टोली के लोग परमादेव को नहीं मानते।

जादू करने वाले व्यक्ति की विशेष स्थिति–

जिन दिनों जादू की क्रियाएं की जाती हैं, उन दिनों नित्यप्रति के सामान्य जीवन से भिन्न प्रकार का जीवन बिताना आवश्यक समझा जाता है। इस काल में कतिपय खाद्य तथा व्यवहार निशिद्ध होते हैं।

'मैला आंचल' में एक मठ का वर्णन है। इस मठ के मध्य में 'चादर टीका' देने के लिए 'आचारज गुरु' आते हैं। नियमानुसार सभी पंचों की उपस्थिति में नया महंत इकरारनामा लिखता है – हमेशा लंगोट बन्द रखकर सतगुरु के स्थल की रक्षा करेंगे। किसी तरह का मादक द्रव्य सेवन नहीं करेंगे। दासी रखेलिन नहीं रखेंगे आदि। महंत बनने के दिन से ही वह नौ सौ बीघे की छोटी जमीदारी का मालिक भी बन जाता है।

'रतिनाथ की चाची' में वर्णित शुभंकरपुर गांव के सभी ब्राह्मण लोग जनेऊ अवश्य धारण करते हैं। ब्राह्मण के दैनिक जीवन में प्रातः स्मरण, संध्या तर्पण, पंचदेवता पूजन (शिव, विष्णु, दुर्गा और विशेष रूप से चंडी) आवश्यक होते हैं।

तांत्रिक साधना करने वाले व्यक्ति आजीवन रक्तांबरधारी रहते हैं। बड़े–बड़े बाल, बड़ी दाढ़ी, ललाट पर सिंदूर का बड़ा टीका, लाल धोती और लाल जनेऊ हाथी दांत के तराशे हुए दानों की सुंदर माला धारण करते हैं। लोग उन्हें सिद्धजी कहते हैं।

ब्रह्मचारी का जीवन बिताने वाले लोग न तो सिर में तेल डाल सकते हैं न आइने में मुंह देख सकते हैं और न कंघी का प्रयोग कर सकते हैं।

इन तीनों में सर्वाधिक महत्त्व मंत्रों का ही होता है। इनसे संलग्न क्रियाएं तथा व्यवहारों में से कुछ क्रियाएं अनावश्यक भी हो सकती हैं। प्रत्येक जादू क्रिया में मंत्र सदैव आवश्यक अंग होते हैं।

जादू सूत्र या मंत्र द्वारा किया जाता है। 'ईश्वर या अदृष्ट शक्ति मानव के साथ सुलह करे, इस निमित्त यह प्रयुक्त होते हैं। आदर्शतः यदि मंत्रों का उच्चारण ठीक प्रकार से हो और अन्य क्रियाएं नियमानुसार संपन्न की जाएं तो अति प्राकृतिक शक्ति कर्त्ता की इच्छानुसार कार्य करने को बाध्य हो जाती है।

यदि जादू क्रिया अपने अभीष्ट में असफल हो जाए तो उसमें अभिचारक द्वारा मंत्रों के शब्द क्रम या संलग्न क्रियाओं में हुई त्रुटि या अनिवार्य निषेधों के अतिक्रमण को कारण माना जाता है।

फ्रेजर का मानना है कि जादू अपने में दो मौलिक कल्पनाएं सम्मिलित करता है – प्रथम समान वस्तु समान वस्तु उत्पन्न करती है या एक कार्य कारण के सदृश्य होता है तथा द्वितीय, जो कि एक समय संपर्क में रही वह सदैव संपर्क में रखकर दूर से उस समय भी क्रिया एवं प्रतिक्रिया करती रहती है जब शारीरिक संपर्क टूट जाता है। इस प्रकार इस विभाजन में दो तत्त्व मुख्य हैं – (1) समान का

समान प्रभाव तथा (2) संपर्क का प्रभाव।

प्रथम प्रकार का नियम इस धारणा पर आधारित है कि जब एक प्रकार की जादू क्रिया की जाती है तब लक्ष्य पर उसका परिणाम भी समानधर्मी होता है। इसे ही अनुक्रमणात्मक जादू कहा गया है। समानता के नियम से संबंधित जादू को होम्योपैथिक या अनुक्रमात्मक जादू भी कह कर पुकारा जाता है।

उदाहरणार्थ मुंडा जाति के लोग पहाड़ की चोटी के ऊपर से सभी आकारों के पत्थर नीचे फेंकते हैं जिससे पत्थर की गड़गड़ाहट, बिजली की गड़गड़ाहट से मिले। इन लोगों का ऐसा विश्वास है कि ऐसा करने से वर्षा होती है।

'जुलूस' के गोडियर गांव का तालेवर गोढ़ी ओझा–गुणी है। जिस स्त्री को वह भैरवी बनाना चाहता है उसकी एड़ी के नीचे मन्तराई हुई मिट्टी डलवाता है। मन्तराई हुई मिट्टी लेकर जाते समय मुट्ठी बांध कर जाते हैं और किसी के पुकारने पर भी पीछे मुड़कर नहीं देखते।

'शाल वनों का द्वीप' में माड़िया लोगों द्वारा शीतला माता को गांव से विदा करने के लिए एक छोटा सा समूह बनाते हैं। यह समूह गांव के बाहर ऐसा स्थान चुनता है जहां देवी लाई जा सके। इसमें यह भावना निहित है कि देवी को गांव से विदा कर दिया। प्रतीकात्मक रूप से यह बीमारी गांव के बाहर हो जाएं और लोग अपने सामान्य जीवन में निश्चिंतता से लौट आए।

दूसरे प्रकार के जादू में समानता के स्थान पर संपर्क का महत्व अधिक माना जाता है। यदि किसी वस्तु का किसी से संपर्क है, या रहा है तो यह समझा जाता है कि संपर्क में आई हुई वस्तु पर जादू क्रियाएं करने से उसके धारण कर्ता पर क्रिया का प्रभाव पड़ेगा।

एक समय में जो वस्तु संपर्क में रही वह सदैव संपर्क में रहकर क्रिया–प्रतिक्रिया करती रहेगी। किंतु यदि बाह्य रूप से संपर्क समाप्त भी हो जाए तब भी वह उन दोनों का संपर्क बना रहता है। जैसे एक व्यक्ति के नाखून या बाल को कोई हानि पहुंचाए आए तो उस व्यक्ति को भी कष्ट पहुंचेगा।

'रतिनाथ की चाची' में वर्णित शुभंकरपुर गांव में – तांत्रिक व्यक्ति 'यंत्र' बनाकर लोगों को देते हैं जिसे पास रखने से अनिष्ट से बचा जा सकता है। स्त्रियां इसे वाम बाजू पर बांधती हैं। 'विभिन्न आकारों' के खाने बनाकर उसके अंदर मंत्रों के अक्षर, संख्या क्रम, पशुओं–पक्षियों के प्रतीक चिह्न आदि अंकित करते हैं। कई रंगों व लिपियों में – भोजपत्र पर, तांबा–सोना–चांदी–पीतल आदि धातु की पतली परतों पर – यह यंत्र कहा जाता है।

'नई पौध' में बिहार के सोराठ के एक गांव नौगछिया का वर्णन है। यहां के लोग भी देवी–देवता का फूल अंदर डलवाकर तांबे, चांदी, सोने या अश्ट धातु का यंत्र मंड़वाते हैं और उसे बाह, गले, कमर में बांध लेते हैं ताकि वह सदैव शरीर से लगा रहे।

निष्कर्ष –

इस प्रकार धार्मिक विश्वास और जादू भयभीत समाज के सदस्यों की गतिविधियों पर नियंत्रण का महत्त्वपूर्ण साधन है। देवी शक्तियों के कोप से तथा संकटों से बचाव के लिए व्यक्ति धार्मिक निषेधों का पालन करते हैं जिससे कम–से–कम मन की संतुष्टि तो अवश्य ही होती है, 'समाज के सदस्यों की गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए धार्मिक विश्वासों और जादू के भय का आश्रय लिया जाता है। इन्हीं विश्वासों को धार्मिक क्रियाओं द्वारा, वचन अथवा कर्म से, अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। समाज के सदस्यों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे धार्मिक निशेधों का उल्लंघन ना करें, अन्यथा देवी शक्तियां उनका जीवन सुखमय नहीं रहने देंगी। जादूकर्ता भी अपनी असाधारण शक्तियों का सदुपयोग या दुरुपयोग कर समाज में इन दैवी शक्तियों के भय को चिरस्थायी बनाए रखने में योग देते हैं। संकट और अनिश्चय की स्थितियों में मानव को धर्म और जादू से सहारा मिलता है। मनोवैज्ञानिक धरातल पर उनकी उपयोगिता असंदिग्ध है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(1) लोक जीवन और साहित्य – रामविलास शर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

(2) मानव और संस्कृति – श्यामाचरण दुबे, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

(3) सांस्कृतिक मानवशास्त्र – मेलिवल जे० हर्सकोवित्स –अनुवाद – रघुराज गुप्त, भारती भवन देहरादून।

(4) हौलदार – शैलेश मटियानी

(5) शालवनों का द्वीप– शानी

(6) सूरज किरण की छांव – राजेंद्र अवस्थी

(7) वन के मन में – योगेंद्रनाथ सिन्हा

(8) रतिनाथ की चाची – नागार्जुन

(9) जंगल के फूल – राजेंद्र अवस्थी

(10) सोना माटी – विवेकी राय

(11) कब तक पुकारूं– रांगेय राघव

(12) ब्रह्मपुत्र – देवेंद्र सत्यार्थी

(13) सफेद मेमने – मणि मधुकर

(14) पानी के प्राचीर – रामदरश मिश्र

(15) मैला आंचल – फणीश्वरनाथ रेणु

(16) परती परिकथा – फणीश्वरनाथ रेणु

(17) जुलूस – फणीश्वरनाथ रेणु

(18) नई पौध – नागार्जुन